अतिरिक्त भाग

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उद्धार की परमेश्वर की योजना

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए लिखी गई थी, न कि लोगों को यह बताने के लिए कि मसीह कैसे बनना है। तौ भी पुस्तक में प्रभु की बात मानने के मूल सिद्धांत हैं और यीशु के पास आने की तैयारी के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने में आप उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

सुसमाचार का सार यीशु की मृत्यु है और पूरे प्रकाशितवाक्य में इसी पर ज़ोर दिया गया है। ''वह हम से प्रेम रखता है और उसने अपने लहू के द्वारा हमें हमारे पापों से छुड़ाया है'' (1:5ख)। उसने अपने लहू से ''हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है'' (5:9ख)। (7:14; 11:8; 12:11 भी देखें।)

मसीही हों या गैर मसीही, प्रभु को दिए हमारे उत्तर को ''भरोसा रखकर आज्ञा मानना'' शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है। प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के लोगों को, उन लोगों के रूप में दिखाया गया है ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने को स्थिर हैं'' (12:17ख)। विजयी वही हैं जो ''परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं'' (14:12; 2:13, 19 भी देखें)।

प्रकाशितवाक्य में बाहरी पापी के लिए उद्धार की शर्तें बोलने के बजाय पहले से मानी गई हैं। सभी के लिए चाहे वे गलती करने वाले मसीही हों या बाहरी पापी, मन फिराना आवश्यक है (2:5, 16, 21, 22; 3:3, 19; 9:20, 21; 16:9, 11)। मसीह विश्वासियों के नामों का अंगीकार करेगा (3:5), जो उसका अंगीकार करने से स बन्धित उसकी प्रतिज्ञा से मेल खाता है (मत्ती 10:32, 33)। अपने वस्त्रों को मेमने के लहू में धोने के हवाले पढ़कर (7:14; 22:14) हमें प्रेरितों 22:16ख याद आता है, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर *अपने पापों को धो डाल।* ''

निश्चय ही प्रकाशितवाक्य में दिया जाने वाला बल यह है कि बपतिस्मा लेने के बाद प्रभु के *विश्वास योग्य* रहो, परिस्थिति चाहे जो भी हो। ''प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (2:10ख; 2:13; 17:14 भी देखें)।

लोगों को प्रभु के पीछे चलने के लिए प्रोत्साहित करते हुए आप उन्हें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिए गए अद्‌भुत निमन्त्रण बता सकते हैं:

> देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ (3:20)।

> आत्मा और दुल्हन दोनों कहती हैं, ''आ!'' और सुनने वाला भी कहे, ''आ!'' जो प्यासा हो वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंत-मेंत ले (22:17; 2:7, 11, 17, 26-28; 3:5, 12, 21)।

सात कलीसियाओं के नाम यीशु का संदेश							
	इफिसुस	स्मुरना	पिरगमुन	थुआतीरा	सरदीस	फिलाडेल्फिया	लौदीकिया
अभिवादन	2:1	2:8	2:12	2:18	3:1	3:7	3:14
यीशु का विवरण	2:1	2:8	2:12	2:18	3:1	3:7	3:14
सराहना	2:2, 3, 6	2:9, 10	2:13	2:19		3:8–10	
निंदा	2:4		2:14, 15	2:20–23	3:1, 2		3:15, 17
चेतावनी और धमकी	2:5		2:16	2:21–25	3:2, 3		3:16, 18, 19
ताड़ना	2:7	2:11	2:17	2:29	3:6	3:11, 13	3:22
प्रतिज्ञा	2:7	2:11	2:17	2:26–28	3:5	3:10, 12	3:20, 21